Chapter 7

अध्याय सप्तम्

मूल्यांकन तथा उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबंध के द्वारा आधुनिक दोहाकारों के विशिष्ट प्रदान की व्यापक चर्चा की गई है। इस अध्ययन के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि सामयिक साहित्य चेतना और परिवर्तित पाठकीय मानसिकता के अनुरुप लघुवृत्तीय छंदों का आज व्यापक रुझान देखा जा रहा है। गज़ल, मुक्तक, रुवाइयाँ, सोरठा, दोहा, बरवै जैसे लघुवृत्तीय छंदों के अनुरुप हीं नवगीत, जैसी विद्या भी, हिन्दी साहित्य में विकसित हुई है जिसके तहद परम्परित गीतों के वृत्त में सरलीकृत संक्षिप्तता और लघुवृत्तीय अभिनव छंदानुबंधन को स्वीकार करके सामयिक चेतना के अनुरुप रचनाकारों की प्रकृति सामने आयी है।

विशेष रुप से मुक्तक या रुवाइयों के समानान्तर गज़लों के शेर जब लोकाग्रही रुझान के साथ साहित्य रसिकों में आकर्षण के केन्द्र बनने लगे तब शेर जैसे छोटे छंद के अनुरुप दोहा छंद का प्रयोग लोकाकर्षण का केन्द्र बना जो विशुद्ध रुप से मुक्तक होते हुए भी प्रबंधात्मक कथ्यों में सूत्रधार की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करता रहा है। दोहा छंद अपने विशिष्ट व्यंग्यार्थ के कारण अधिक सक्षम और सार्थक सिद्ध हुआ है। इसी कारण सन् 80 के दशक से इसका प्रयोग बड़ी तीव्र गति से अग्रसर हुआ है।

वैसे तो दोहा छंद अधिकांशता आंचलिक भाषाओं में प्रयुक्त होता रहा है। ब्रजभाषा अवधी, बुन्देली आदि आंचलिक भाषाओं मं इसके व्यापक परिमाण में प्रयोग हुए हैं। दोहा छंद का प्रचलन आदिकाल के अपभ्रंस और पालि साहित्य से ही प्रचलन में आ गया था। अमीर खुसरों ने कहमुकरियों और पेहलियों के माध्यम से इसके आकर्षक प्रयोग किये। वीरगाथा काल के व्यापक साहित्य में

इसका बहुत प्रयोग किया गया और इसके पहले संस्कृत के पौराणिक ग्रंथों में भी यत्र तत्र सूत्र संचालन हेतु तथा रागात्मक पड़ाव हेतु दोहा छंद का प्रयोग होता रहा है। पूर्व मध्यकाल में तुलसी के रामचरित मानस में तथा सूरदास के स्कंधात्मक सूरसागर में और जायसी के पद्मावत में चौपाई छंदों के साथ-साथ एक निश्चित अंतराल की व्यवस्था में दोहा छंद का प्राधान्य देखा जा सकता है। आगे चलकर बिहारी द्वारा इसे साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। जब बिहारी की सतसई ने दोहा छंद को अतिउच्च्य प्रतिष्ठा प्रदत्त की थी। बिहारी सतसई से पूर्व दोहा का प्रयोग या तो लक्षण ग्रंथों में काव्यांग विवेचन के लक्षण उदाहरणों में प्रयोग होता था या फिर भाषा के प्रबंधात्मक ग्रंथों में एक निश्चित व्यवस्था के तहद इसे प्रयुक्त किया गया। रहीम,रसखान, ब्रजवार आलम, शेख, तारासिकोप, तक प्रबंधात्मक ग्रंथो में इसकी संनिहिति सर्वत्र प्रतिष्ठा का विषय बनी है।

आधुनिक युग को मानवीय जीवन की अतिव्यस्त संलग्नता का युग कहा जाता है। संचार माध्यमों ने सोच के विस्तृत पटल सामनेरखे संसार की, देश-विदेशोंकी दूरियाँ कम हुई हैं तो आधुनिक तकनिकी माध्यमों ने बडे-बडे ग्रंथों के पठन पाठन ने एक प्रकार की अरुचि और बोझिल पने के अहसास को आगे बढ़ाया है। ऐसे परिवर्तित समय में पाठकीय सोच के मूल्य भी स्थानान्तरित हुए हैं। व्यक्ति कम समय में ज्यादा से ज्यादा लाभ लेना चाहता है। ऐसी स्थिति में दोहा छंद की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता और यही कार हैं कि बहुत सारे पदार्थ रचनाकार अकविता, नई कविता तथा सामयिक कविता से हटकर इस दोहा छंद में प्रवृत्ति हुए हैं। बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक में सौ से भी अधिक हिन्दी खड़ी बोली दोहाकार सामने आये हैं जिन्होंने मुक्तक और प्रबंध दोनों के ही रुपों में दोहा का बडा ही सार्थक प्रयोग किया है। अनेक लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकारों ने अनेक स्थापित हस्ताक्षरों को लेकर बडे ही सक्षम दोहा संग्रह सम्पादित किये हैं जो परंपरा से हटकर सामयिक सोच से संपृक्त होकर अपनी प्रासंगिक अनिवार्यता को प्रकट करते रहे हैं। जैसा कि कहा जा चुका है कि पूर्ववर्तीय मध्यकालीन कवियों ने इसका प्रयोग आंचलिक भाषा मे किया था और यह प्रयोग हरिऔध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, दुलारेलाल भार्गव और कवि गोविन्द तक अनर्वित चलता रहा है। बीसवीं सदी के प्रारम्भ से ही ब्रजभाषा के विघटन और खड़ी बोली के स्थापन की प्रक्रिया शुरु हो गई थी। छायावादी काव्य चेतना ने परम्परित काव्यादर्शो को पीछे छोड़ दिया था और कविता राजमहलों से उतरकर खेत हर किसानों की झोंपडी तक आ पहुंची थी। धीरे-धीरे कविता का ज़मीन से जुड़ाव बढ़ता गया। कविता में आम आदमी के दख़लनदाजी महसूस की जाने लीग दोहा कथ्य इसी कथ्य से जुड़कर अग्रसर हुआ और जनाग्रही वृत्ति से जुड़कर लोकप्रिय होने लगा।

सन् साठ के बाद जिस तेजी के साथ रचनाकारों का रुझान दोहा की ओर हुआ है जिससे इसकी सक्षमता व लोकप्रियता स्वयं ही उद्घाटित हो जाती है। कवि संमेलनो मुशायरों में जहाँ

गजल ने अपने पाँव जमा लिये वहाँ इस उर्दू पन से हटकर कुछ अलग छंद से गज़ल को मात देने की कवियों ने सूझी तभी दोहा छंद अपनी पूर्ण ओजस्वीता और अभिव्यक्ति के नये कलेवर के साथ गज़ल के सेर के सामने दोहा सवा सेर बनकर उपस्थित हुआ। लोकमानस की सांस्कृतिक चेतना प्रायः दोहे के ही मुख से मुखरित हुई है। इस छंद ने जहाँ एक तरफ रमणीय अर्थ प्रतिपादक शब्दों एवं रसयुक्त वाक्यों के द्वारा काव्य रसिकों पर जादू डाला है। वहीं अनेकानेक विषयों को इसी छंद में अभिव्यक्ति मिली है। जिसे दोहा छंद की भूमिका और प्रारंभिक प्रयोग में देखा जा सकता है। दोहा ने अनेकानेक छंदो के साथ तथा स्वयं प्रथक से भी अपनी पहचान बनाई है। कालीदास के विक्रमोर्वशीयम् से लेकर निरंतर विकास के नये-नये आयामों को स्पर्श करते हुए अपनी लोकप्रियता स्वयं ही प्रमाणित की है।

आलोच्यकाल के दोहा की भाषा प्रमुख रुप से देखा जाय तो परिमार्जित हिंदी है जो नये नये भाषिक सामर्थ्य के साथ प्रस्तुत हुई है। जो मुख्यतः व्यंजना शब्द शक्ति का अनुसरण करती है। दोहा अपनी मुख्य भाषा के साथ अनेक आंचलिक बोलियों से अनुबंधित है तदुपरान्त दोहा के भाषिक गठन में रचनाकारों ने कुछ अभिनव शब्द संयोजन भी किये हैं। जिसमें व्याकरण के नियम भी बदले से नजर आते हैं। जिसका प्रमुखतः यही कारण नज़र आता है। कि रचनाकारों के सामने कथ्य का महत्व अधिक था भाषा तथा शब्दों पर अधिक ध्यान नहीं था। दोहे में भाषिक नवीनता लाने के लिए रचनाकारों ने अप्रचलित तथा संयोजित शब्दों का भी यत्र तत्र प्रयोग किया है जिसका उल्लेख हम आगे कर चुके हैं।

व्यंग्य पैदा करना भी आधुनिक दोहा की एक विशेषता रही है। परिणामतः अन्यान्य भाषा और शब्दावली का प्रयोग करके कथ्य को एक नये व प्रभावी ढंग से प्रस्तुति मिली है जिसमें व्यंग्य का तीखापन और तिलमिलाहट को महसूस किया जा सकता है। जिससे ये दोहे समाज का प्रतिबिम्ब बन गये हैं। समाज का कोई भी विषय व जीवन के आंतरिक और वाह्य क्रिया कलापों को इस दोहे में बखूबी अभिव्यक्ति मिली है।

दोहा में अभिव्यक्ति के अनेक विषय उल्लेखित हुए हैं जिनकी अपनी एक सुदीर्घ परम्परा भी रही है। जीवन घटनाएं हावभाव, प्रथा कुप्रदा, आदान प्रदान मान्यताएं, परिवेश नीति समझ आदि अनेक विषयों का वर्णन इन दोहों में नवीनता के साथ देखने को मिलती है। प्रतीक और उपमान बदले हैं जहाँ हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक युग में अधिकांश कवि राजाश्रित थे अतः उनकी कविता भी उन्हीं के इर्द गिर्द घूमती थी। आगे चलकर परिस्थितियों में बदलाव आया और वर्ण्य विषयों में विविधता का संचार हुआ। मध्यकाल में हिन्दी कविता का विकास बड़ी तेजी के साथ

हुआ विभिन्न विषयों को काव्य रुप में अभिव्यक्त किया गया। अभिव्यक्ति के माध्यम के रुप में दोहा प्रमुखतः के साथ सामने आया। लगभग सभी कवियों ने इस छंद पर अपनी लेखिनी के जौहर दिखाये जिसमें अन्यान्य विषयों को अभिव्यक्ति मिली। सामयिक युग में भी हिन्दी खड़ी बोली के दोहाकारों ने ऐसे ही अनेक विषयो (धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक) को नवीन विम्ब और उपमानों के साथ प्रस्तुत किया है। जिसका उल्लेखं हम अन्यत्र कर चुके है। हिन्दी साहित्य का ज्यों ज्यों समय आधुनिक काल की ओर बढ़ता गया। त्यों त्यों दोहों की मार्मिकता में भी बदलाव आता गया। आज का दोहा पुराने दोहे से कथ्य और अभिव्यक्ति के तौर तरीकों में कुछ भिन्न प्रतीत होता है। प्रतीक उपमानों में बहुत ही फ़र्क आ गया है। प्रमुखतः देखा जाय तो आधुनिक दोहे मात्र परिस्थिति और मनःस्थिति की उपज ही प्रतीत होते हैं। उनमें स्पष्ट रुप से आज का युग झलकता है और यथार्थ आँखें खोलता है। अतः आधुनिक दोहा साहित्य मे विषय तो परम्परित ही है परन्तु उनकी अभिव्यक्ति एवं मान्यताओं में नवीनता का संचार स्पष्ट देखा जा सकता है। अध्यात्मक विषय को लेकर रचित दोहों में आज की अध्यात्मिक सोच एवं मानवीय व्यवहारों की झलक स्पष्ट ही देखने को मिल जाती है। इसी प्रकार सांस्कृतिक दोहों में पश्चिमी सभ्यता के चलते हमारी परम्परित गरिमामय संस्कृति का हनन भी स्पष्ट दृष्टि गोचित होता है। मुख्य विषय में राजनीति का स्थान सर्वोपरि है। इस विषय पर अधिकाधिक दोहों का सृजन हुआ है जिसमें नवीनता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। व्यंग्य की चोट और तीखापन इन दोहों का प्रमुख अंग है। कहने का तात्पर्य है कि आधुनिक दोहा साहित्य में विषय को परंपरित ढंग से न कहते हुए अलग ही ढंग से कहा गया है। जिसका उल्लेख हम अन्यत्र कर आये हैं।

सामाजिक वर्ण्य विषय में अनुबंधित समसामयिक दोहों के अनुशीलन से स्पष्ट है कि कवियों ने समाज में व्याप्त प्रत्येक समस्या को गहराई तक लिखा है। और समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, कुरीतियों विषमताओं के प्रति कवि के मन में गहरा क्षोभ भी प्रदर्शित हुआ है। अपने भावों को शाब्दिक अभिव्यक्ति देने के लिए इन दोहाकारों ने प्रभावशाली वाक्चातुर्य का प्रयोग किया है जिसमें लोकजीवन की झाँकी के साथ दोहाकार की मौलिक दृष्टि भी सामने आयी है जिसमें उचित, अनुचित के रुझान भी प्राप्त होते हैं। रचनाकार स्वयं सामाजिक होता है। अतः वह समाज को जितनी नज़दीकी से देखता है उतनी ही वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त भी करता है।.समाज के बदले हुए समीकरण साहित्य सृजन का विषय भी बन चुके हैं, इन समसामयिक दोहाकारों ने समाज में चारों तरफ व्याप्त राजनीति के हाथों हो रहे भ्रष्टाचार, शोषण, मूल्य विघटन, आतंकवाद से उत्पन्न त्रासद-यथार्थ स्वार्थ परता, अवसरवादिता योजनाओं का खोखलापन, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, नशाखोरी, व्यक्तित्व के बहुरुपिये पन, छल छदम, और बिकाऊ न्याय व्यवस्था जैसे सामयिक मावन द्रोही पक्षों पर

भी खुलकर अपनी कलम से प्रहार किये हैं। अतः स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि इन सामयिक दोहों में जीवन का प्रत्येक पक्ष झलकता है। और इन पक्षों की प्रस्तुति में नये-नये बिम्ब, उपमान एवं प्रतीकों का प्रयोग करते हुए भावव्यंजना की है। श्रृंगारिक विषय से अनुवांधित दोहों में भी दोहाकार में विभिन्न उपकरणों को आधार बनाकर अपने अभीष्ट कथ्यों को नये-नये उद्‌गारों के साथ व्यक्त किया है।

इन दोहों में जहाँ सौन्दर्य का विषय है। वहाँ प्रकृति के परिवेश को नवीनतम् विचारों की श्रृंखला में प्रस्तुत करते हुए सूरज, चंदा, तारे, ऊषा, भोर, मध्यान्ह, दोपहर, साँझ, संध्या, रात्रि, वृक्ष, फूल, पत्ते, धूप, धुँआ, हवा, आकाश, बादल, इन्द्रधनुष, वर्षा, बिजली, ओले, शर्दी, गर्मी, पत्तियाँ, दूब, बेल, फल, रोशनी, अंधकार जैसे उपकरणों के आधार पर विम्ब अथवा प्रतीक के माध्यम से अपने कथ्य प्रस्तुत किये हैं। इस प्रस्तुत में दोहाकारों की अपनी एक अलग ही मौलिक दृष्टि रही है जैसे -

अच्छा लगता है तेरा, आना मित्र स्वरुप।
सर्द हवा के दौर में, ज्यों गर्मीली धूप॥

मुख्यतः देखा जाय तो इन दोहों में कवियों ने प्राकृतिक परिवेश में बैठकर अपनी बात सहज ही कह दी है जिसमें किसी भी प्रकार के चमत्कार प्रदर्शन की भावना उतनी तीव्र नहीं है जितनी कि कथ्य को स्वभाविक अंदाज में कहने की है। इन दोहों में दोहांकारों की अपनी अनुभूति मुख्यतः सृष्टि व्यापी रही है जिसके अन्तर्गत पर्यावरण, वातावरण एवं ऋतुओं में होने वाले सर्वग्राही परिवर्तन पर दृष्टि कुछ अधिक ही सजग और स्नेहायित रही है तथा प्रत्येक दोहा का अपना अलग भाव विचार है। प्रबंधात्मक कथा को इन दोहों में समाहित नहीं किया गया है। सामयिक संदर्भ से जुडे इन दोहों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है।

सामयिक दोहों में जहाँ नैतिक वर्ण्य विषय है वहाँ पर इन दोहों की मार्मिकता उतनी तीव्र नहीं है। जितनी मध्यकालीन कवियों के दोहों में है। परन्तु मानवीय स्वभाव की व्याख्या इन दोहों में बहुत ही मनोवैज्ञानिक एवं सटीक प्राप्त होती है। दोहा लोकाग्रही छंद होने से लोकाचार की बात इस छंद में अधिकाधिक प्राप्त होती है जो आज भी दोहा छंद की परम्परित गरिमा को बनाये हुए है। कुछ दोहाकार ऐसे है जिन्होंने अपने दोहों में लोकाचार की बात को अधिक स्थान दिया है। ऐसे रचनाकारों में रामेश्वर 'हरिद' भगवत दुबे, रामनिवास 'मानव', अनंतराम मिश्र 'अनंत', महेश दिवाकर आदि हैं।

दोहा छंद को फिर से गौरव दिलाने में देश भर के ऐसे अनेक सशक्त हस्ताक्षर हैं। जिन्होंने साहित्य की अन्य विद्याओं के साथ-साथ दोहा छंद में भी अपने भाव व्यक्त किये हैं। देश भर में व्याप्त इन दोहाकारों ने दोहों का इतने विपुल प्रमाण में सृजन किया है कि उन्होंने पृथक से दोहा संग्रह, दोहा सतसई, हज़ारा जैसे ग्रंथों का निर्माण भी कर दिया है। साथ ही साथ कई दोहाकारों की रचनाओं को मिलाकर दोहा संकलन भी स्वतंत्र रुप से मुद्रित हुए हैं। दोहा छंद के सिद्धहस्त एवं वरिष्ठ दोहाकार देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' स्वयं हजारों दोहों का निर्माण कर चुके हैं। उन्होंने अपने स्वतंत्र दोहा संग्रहों के साथ-साथ सप्तपदी के कुल सात अंक भी सम्पादित किये हैं जिससे स्पष्ट होता है कि दोहा छंद अपनी खोई हुई गरिमा पुनः प्राप्त कर चुका है। इसी परम्परा में ट्रक गेट कासिम पुर के अशोक 'अंजुम' के संपादन में भी दोहा दशक नामक संकलन का बड़ी ही खूब जोशी एवं तेजी के साथ संपादन हो रहा है। अतः साहित्य में दोहा छंद की प्रतिष्ठा स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। आज देश भर की अधिकांश पत्र पत्रिकाओं में दोहा की चर्चा सहज ही देखने को मिल रही है और साथ ही इन पत्रिकाओं के दोहा विशेषांक भी निकल चुके हैं। देश भर में ऐसे अनेक दोहाकार हैं जो प्रकाशन के विविध माध्यमों से दोहा छंद को उसकी पूरी आन, बान, शान के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में दोहा छंद के अनेक सशक्त हस्ताक्षरों के व्यक्तित्व एवं प्रदान पर प्रकाश डाला गया है जिन्होंने अपने जीवन के कुछ अमूल्य पल दोहा छंद को प्रतिष्ठित करने में व्यतीत किए हैं। इन दोहा छंद के सशक्त हस्ताक्षरों के योगदान का उल्लेख शोध प्रबंध में अन्यत्र किया जा चुका है।

दोहा छंद में काव्य के सभी गुण विद्यमान हैं। उसकी गेयता चमत्कारिकता, आकर्षण उत्पन्न करती अद्‌भुत छवि, बिम्ब, उपमान, अलंकार, रस एवं भाषा आदि का सुन्दर संयोजन दोह छंद को समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आकर्षित बनाता है। काव्य में जहाँ सौन्दर्य की बात आती है वहाँ काव्य में सौन्दर्य की संनिहिति ही उसकी अर्थव्रत्ता को स्थापित करती है। सामयिक दोहा में भी सौन्दर्य के अनेक उपादान प्राप्त होते हैं जिनसे प्रवावित होकर दोहा भावाभिव्यक्ति का सफल माध्यम बना हुआ है। प्रस्तुत प्रबंध में काव्य को सुन्दर बनाने वाले अनेक मानदण्डों का उल्लेख किया गया है। जिसमें कथ्य का सौन्दर्य प्रस्तुति का सौन्दर्य, विषय का सौन्दर्य, ध्वनि का सौन्दर्य, वक्रोक्ति का सौन्दर्य, संवेदनाओं का सौन्दर्य, मनोविकार, दृष्टि का सौन्दर्य, प्रकृति का सौन्दर्य, मनोवेगों का सौन्दर्य, अभिप्राय का सौन्दर्य, प्रतीक एवं विम्ब योजना का सौन्दर्य, अलंकार, रस, भाषा आदि का प्रमुखतः से उल्लेख हुआ है। इन सबके बाद भी दोहा छंद का अनुशासित रुप सुरक्षित रहा है। दोहा के अनेक उतार चढाव एवं कई परिवर्तन के बाद थी, तेरह-ग्यारह की यति

वाले इस द्विचरणीय दोहे के आकार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। कुछ नवोदित कवियों ने नाधिकार एवं अशुद्ध दोहा छंद का प्रयोग अवश्य किया है जो सर्वत्र अग्राह्यीय रहे हैं।

दोहा लघुवृत्तीय होने के कारण इसमें सौन्दर्य का समन्वय कवि की पूर्वाग्रही चेष्टा रही है जिसमें वह इस छंद के कथ्य को अधिक आकर्षित रुप से प्रस्तुत करके श्रोता या पाठक को अधिक सम्मोहित करना चाहता है, दोहा छंद के इस सौन्दर्यवादी अभिगम की चर्चा हम विस्तृत रुप से शोध प्रबंध में अन्यत्र कर आये हैं।

आधुनिक काल की कविता में कई परिवर्तन आये, मध्यकाल में काव्य की जो स्थूल माँसल वर्णन की भंगिमाएं थी वे छायावाद आते-आते तिरोहित हो चुकी थीं। छायावाद में काव्य सौन्दर्य को मानसी अनुभूतियों का विषय बना दिया गया जिसमें व्यक्ति में समष्टि समाहित हो गई। प्रसाद ने दार्शनिक स्वरों में लोकोत्तर भावभूमि के सौन्दर्य की चर्चा की वही दूसरी और यह काव्य सौन्दर्य अन्यान्य अभिव्यक्तियों से प्रभावित रहा है। आगे चलकर कविता में अनेक प्रयोग हुए जिसमें साहित्य सम्पूर्ण रुप से मानव जीवन का दर्पण बन गया। कविता में भी यही स्वर गुंजित होने लगे, जिसमें मानव समाज जन जीवन की चर्चा स्पष्ट देखी जा सकती है।

आज सामयिक राजनीतिक विद्रूपता में मसल्स माफिया और मीडिया की चाटुकारिक भूमिका ने जैसे आम आदमी का जीना दूभर कर दिया है। प्रशासन जैसे आज आतंकवाद और गुंडा गिर्दी के तहद घुटने टेकने को मजबूर हो गया है। भारतीय सामाजिकता की रीढ़ टूट चुकी है। विखंडित परिवार एकालाप करने को बाध्य हैं । गरीब मध्यम वर्ग कोर्ट और कचहरी के चक्कर और पुलिस चौकी में हाजिरी दर्ज कराता हुआ एक अभिशापित जिंदगी जीने बाध्य है कहीं दहेज का दूषण है तो कहीं इसी गलित कानून के तहद लडकियाँ भी अपनी ससुराल पक्ष में अपनी उद्दंडता के कारण परिवारों को तहस-नहस कर रहीं है। न्यायिक विधियों की असंगत व्याख्या हो रही है और सम्पूर्ण प्रशासन तंत्र माफिया सरदारों की गोद में जा बैठा है।

मध्यम वर्ग का आदमी अपनी एक निश्चित आय के तहद अपनी बिखरी हुई सामाजिकता और पारिवारिकता को सहेज नहीं पा रहा। मध्यम वर्ग का क्लर्क टाइप का एक आदमी अपनी पूरी ज़िन्दगी की कमाई की बचत से एक छोटा क्वाटरनुमा घर खरीद लेता है या फिर लडकियों की शादी करके दिवालियेपन की हद तक टूटकर बिखर जाता है, दोहा का विषय सीधा वर्तमान से सरोकार रखता है। जहाँ राजनीतिक भ्रष्टता, स्वार्थ लोलुपता, अधिकारियों की कुत्सित भूमिका बिका हुआ न्यायतंत्र, रहन रखी हुई कोतवालियाँ और व्यवसाय की तलास में हतास और टूटे हुए आदमी का दर्द इन दोहों से सर्वत्र देखा जा सकता है।

विगत अध्याय में स्पष्ट किया जा चुका है कि दोहा न तो अब भक्तिकालीन धार्मिक आस्था का प्रतीक रहा है और न ही तथाकथित आदर्शवादी नैतिक उद्देशों का दोहा आज के समस्त परिवेश को देख कर आगे बढ़ा है। दोहाकार की आँखें खुलीं हैं वह एक पारदर्शी सोच के तहद इस कुशित और गंदी व्यवस्था को खुलेआम नंगा कर देता है।

अपने छोटे वर्णवृत्त के कारण दोहा आम आदमी के लिए सहजग्राह्य है और छंद की सर्वस्व वृत्तीत्मकता के कारण लोकप्रिय भी है। लगभग एक हजार साल से पहले से प्रचलित यह दोहा छंद जनवादी संस्कृति में आम आदमी के कण्ठ्य में अवस्थित रहा है। गाँव घर, चौपाल, सभा, पंचायत, पर्व, त्यौहार आदि के अवसरों पर जहाँ भी आम आदमी एकत्र होकर शोक या हर्ष में अपने अंतस्त भावों को गुनगुनाता है। वहाँ दोहा छंद सामने आता है। यह एक जनाग्रही लोकप्रिय छंद है। बच्चे, बूढे, जवान स्त्रियाँ सभी के कंठ पर आरुढ़ है। आज के दोहाकार की दृष्टि सार्वभौमिक और सर्वजनीय है। वह घर के अंदर जाकर आत्मीय संवेदनाओं से जुडकर दादा-दादी, काका-काकी, बुआ, भाई, माँ-बाप, बहन, बेटी, दोस्त-दुश्मन, अडोस-पडोस, गली-बाजार, देहात, कस्बा, नगर मे सर्वत्र घूमता हुआ समाज के हर वर्ग और वर्ण को स्पर्श करता है । सेवा निवृत्त एक बाप की अन्तर्वेदना जवान या प्रौढा होती हुई अपनी बेटी का असहीय भार उच्चार के अभाव में खाँसते हुए बूडे माँ-बापों को मौन होकर सहन करने की लाचारी, भाई-भाई और बाप-बेटे के बीच टूटती हुई स्वार्थ संधि और टूटते सूत्र, खण्डित होती संवेदनाएँ छार होती आत्मीयताएँ आज के दोहे के विषय हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में पहलीबार दोहा छंद की प्रभावान्विती ब्रहद पटल पर दोहाकार की उदारवादी सोच संघर्षरत अपनी जिजीविषा से जूझता हुआ आम आदमी इन दोहों में समाविष्ट हो ऐसा नहीं है कि यह दोहे मात्र शोषण दमन अन्याय अनीति और विखण्डन की ही बात करते हैं। इन दोहों में प्रणय की सुकुमार भावनाएं भी है। वियोगजन्य व्यग्रताओं के आवेश भी है। प्रकृति की मनोरम छटाएं भी हैं जलाशय, नदी, झरने, समुद्र, बरसात, नदनालों के अजस्त्र प्रवाह भी हैं। सावन की उमडती घटाएं बिजलियां मेघ और दूर-दूर तक घानी चूनर ओढकर गाती नाचती चंचल, प्रकृति का हर्ष भी इसमें उल्लेखित है। इस शोध प्रबंधक के माध्यम से प्रथम वार दोहा-दोहाकार और इससे संस्पृक्त बहुआयामी सोच पर प्रथमवार ही निस्सार से विचार किया गया है। दोहा छंद का वृत्त कथ्य का आयाम भाषा के तेवर शब्दों के संयोजन, सोच की यथार्थवादी जमीन, परिकल्पनाओं के उच्चस्थ उन्मेश प्रकृति की सतरंगी छटाओं का काव्यांकन और आम आदमी से रुबरु होकर बहुत कुछ उसके आस-पास के माहौल को पारदर्शिता के साथ व्यक्त करने का आग्रह

इस दोहा छंद के अंतर्गत देखा जा सकता है जिसकी चर्चा विगत हो चुकी है।

आधुनिककाल में दोहा छंद की वापसी उसके स्वरुप के नये तेवर कथ्य की अभिनव भूमिका प्रतीकों के अछूत प्रयोग और सौन्दर्यवादी अभिगम की सरलता में परंपरित छंदों में इस दोहा छंद को हीं वैशिष्ट प्रदान किया है।

मध्यकाल मे भक्ति और रीति कवियों ने अधिकतर कवित्त, सवैया, छप्पय, रोला, बरवै, चौपाई, कुण्डलियाँ, आदि कुछ विशिष्ट छंदों का अधिक प्रयोग किया है। जिनमें दोहा छंद एक मात्र ऐसा छंद है जो हिन्दी काव्य के प्रारम्भिक काल से लेकर अर्थात प्रागैतिहासिक काल से आज तक अपनी अपार ओजस्विता के साथ ज़िंदा है।

आज व्यक्ति की स्वयं की व्यस्तताएं इतनी बढ़ गयीं है कि वह दीर्घवृत्तीय बड़ी-बड़ी काव्य रचनाओं को पढ़ने व सुनने के लिए मानसिक रुप से तैयार नहीं है। ऐसी अत्यंत व्यस्त ज़िंदगी में हिन्दी काव्य मे दोहा छंद समय की आवश्यकता बनकर सामने आया है और जिसका प्रयोग आज सर्वाधिक हो रहा है और निकट भविष्य में भी यही दोहा छंद इसी तरह उच्चस्थ पद पर आरुढ़ होकर अग्रसर होगा।

परिशिष्ट

1) प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य तथा उनका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव। (रामसिंह तोमर)

2) हिन्दी काव्य धारा (पंडित राहुल सांकृत्यायन)

3) हिन्दी साहित्य का इतिहास। (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

4) हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास। (डॉ. नगेन्द्र)

5) भक्ति काव्य और लोकजीवन। (शिवकुमार मिश्र)

6) समकालीन कविता और सौन्दर्यबोध। (रोहिताश्व)

7) प्रगतिशील कविता में सौन्दर्य चिन्तन। (डॉ. तनुजा तिवारी)

8) म.प्र. साहित्य सरोवर (नागरी दोहा विशेषांक), सं. कमलकान्त, भोपाल, म.प्र.।

9) मसि-कागद, अंक-18, सं. डॉ. श्याम सखा 'श्याम', रोहतक।

10) प्रयास (त्रैमासिक), सं. अशोक 'अंजुम', अलीगढ़।

11) सप्तपदी, खण्ड-1, 2, 3, 4, 5 (संकलित दोहा संग्रह), सम्पादक : डॉ.देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'।

12) दोहा दशक, खण्ड 1, 2, 3 (संकलित दोहा संग्रह), सम्पादक : अशोक 'अंजुम'।

13) नूतन दोहावली (दोहाकार : सुबोध चन्द्र शर्मा 'नूतन')।

14) नावक के तीर (डॉ. अनन्तराम मिश्र 'अनंत')।

15) बढ़ने दो आकाश (डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय)।

16) हम जंगल के फूल (ब्रजकिशोर वर्मा 'शैदी')।

17) तुजुक हज़ारा (विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक')।

18) अगआई फिर दूब (डॉ. अनन्तराम मिश्र 'अनंत')।

19) एक बादल मन (राधे श्याम शुक्ल)

20) चुटकी भर चाँदनी (राजेन्द्र वर्मा)

21) धूप बहुत कम छाँव (डॉ. गोपाल बाबू शर्मा)

22) भारत हो सम्पन्न (ए.बी. सिंह)

23) शब्दों के संवाद (आचार्य भगवत दुबे)

24) शब्द विहंग (आचार्य भगवत दुबे)

25) ढाई आखर (डॉ. हबीब 'हुबाव')

26) सारांश (रामेश्वर 'हरीद')

27) 'बोलो मेरे राम' (डॉ. राम निवास 'मानव')

28) सहमी सहमी आग (डॉ. राम निवास 'मानव')

29) 'जैसे' (हरेराम 'समीप')
30) खूँटी लटकी धूप (अश्विनी कुमार पाण्डेय)
31) प्रतिबिम्ब (कोमल शास्त्री)
32) कबीरा (जीवन मेहता)
33) मानस माला (डॉ. पारुकांत देसाई)
34) देश बड़ा बेहाल (शिवकुमार पराग)
35) विविधा (डॉ. महेश दिवाकर)
36) युवको! सोचो! (डॉ. महेश दिवाकर)
37) बजे नगाडे काल के (आचार्य भगवत दुबे)
38) शिवशरण सहस्त्रसई (शिवशरण दुबे)
39) आँखों खिले पलास (डॉ. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र')
40) अमलतास की छाँव (डॉ. पाल भसीन)
41) पानी की बैसाखियाँ (दिनेश शुक्ल)
42) रंग-रंग के स्वर (विभाकर आदित्य शर्मा)
43) हर सिंगार के फूल (बाबू राम शुक्ल)
44) विवेक दोहावली (नरेन्द्र अहूजा 'विवेक')
45) कमल सतसई (गोविन्द चतुर्वेदी)
46) विराट सतसई (डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी)
47) कोने खुली किताब (डॉ. शैल रस्तोगी)